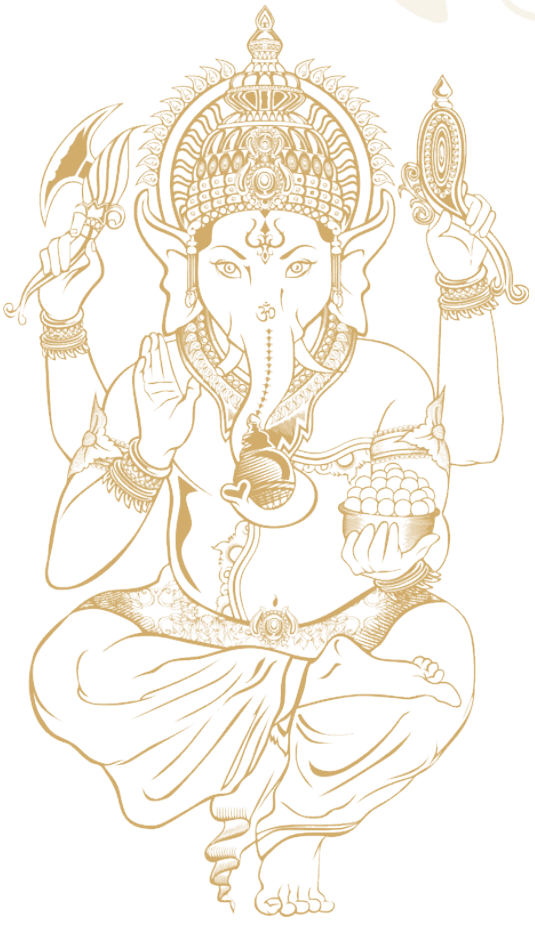

Mr.shweta

06 Jul 2004

07:05 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119565601

तिथि 06/07/2004 **समय** 07:05:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:55:03
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	01:41:23 घं
वेलान्तर	00:04:46 घं
सूर्योदय	05:28:59 घं
सूर्यास्त	19:22:35 घं
चैत्रादि संवत	2061
शक संवत	1926
मास	श्रावण
पक्ष	कृष्ण
तिथि	5
नक्षत्र	शतभिषा
योग	आयुष्मान
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	सा-सपना
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	सूर्य
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

राहु 13वर्ष 1मा 5दि
गुरु
11/08/2017
11/08/2033

गुरु	29/09/2019
शनि	11/04/2022
बुध	17/07/2024
केतु	23/06/2025
शुक्र	22/02/2028
सूर्य	10/12/2028
चन्द्र	11/04/2030
मंगल	18/03/2031
राहु	11/08/2033

योगिनी

धान्या 2वर्ष 2मा 5दि
सिद्धा
11/09/2021
11/09/2028

सिद्धा	21/01/2023
संकटा	11/08/2024
मंगला	21/10/2024
पिंगला	12/03/2025
धान्या	11/10/2025
भ्रामरी	22/07/2026
भद्रिका	13/07/2027
उल्का	11/09/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			10:06:11	कर्क	पुष्य	3	शनि	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			20:24:36	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	सम राशि	1.60	अमात्य	पितृ	सम्पत
चंद्र			10:17:52	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	गुरु	सम राशि	0.92	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			13:45:50	कर्क	पुष्य	4	शनि	राहु	नीच राशि	1.38	पुत्र	भ्रातृ	विपत
बुध			08:39:09	कर्क	पुष्य	2	शनि	शुक्र	शत्रु राशि	1.19	कलत्र	ज्ञाति	विपत
गुरु			20:11:22	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	गुरु	मित्र राशि	1.33	भ्रातृ	धन	साधक
शुक्र			16:24:02	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	शनि	स्वराशि	1.63	मातृ	कलत्र	मित्र
शनि		अ	22:34:23	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	मित्र राशि	0.79	आत्मा	आयु	सम्पत
राहु	व		14:55:33	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		14:55:33	तुला	स्वाति	3	राहु	केतु	सम राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

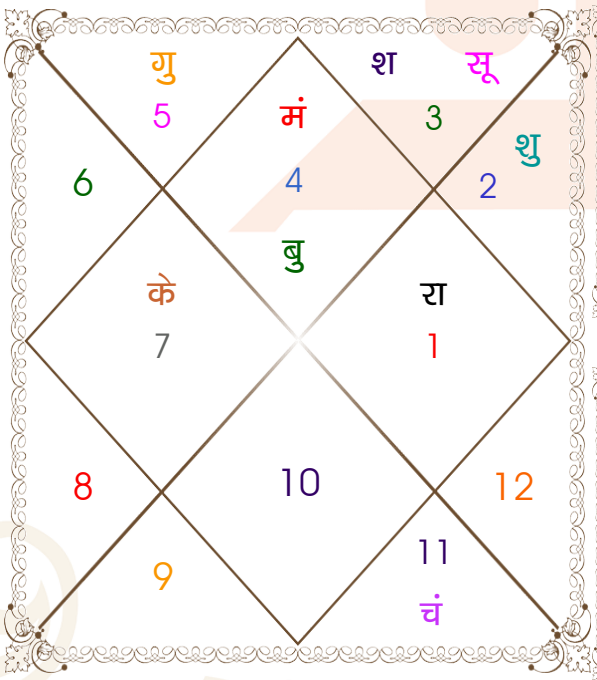

चन्द्र कुंडली

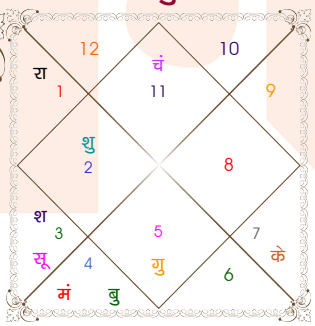

नवमांश कुंडली

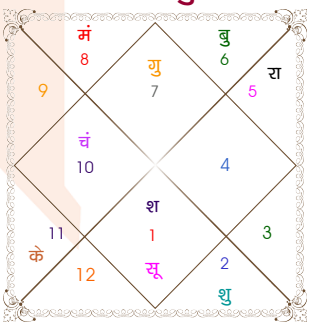

सर्वाष्टकवर्ग

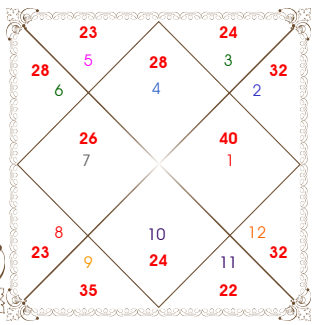

दशमांश कुंडली

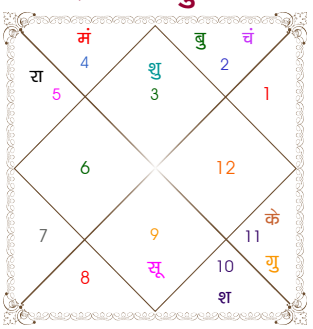

नक्षत्रफल

आप शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, गण राक्षस तथा योनि अश्व होगी। नक्षत्र के द्वितीय चरणपनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "स" या "सा" अक्षर से होगा यथा- सरिता, सविता आदि।

आप ठंड से भयभीत रहेंगी तथा इसे सहन करने में अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगी। आप वीरता के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी तथा अत्यन्त साहसिक कार्यों को करने के लिए सदैव उत्सुक तथा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपके अधिकांश कार्य भी साहस पूर्वक ही सम्पन्न होंगे। आप कठोरता के भाव के अधिक रूप में प्रदर्शन करेंगी एवं दया तथा करूणा का भाव आप में अल्प मात्रा में ही रहेगा। आप एक चतुर महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को चतुराई से ही सम्पन्न करेंगी। साथ ही अन्य लोग भी आपको चतुराई से प्रभावित रहेंगे तथा आपका यथायोग्य सम्मान भी करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित रहेंगे एवं आपसे प्रभावित तथा भयभीत रहेंगे।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

ज्योतिष शास्त्रा के प्रति आपके मन में प्रारम्भ से ही श्रद्धा तथा रूचि रहेगी एवं इसका आप परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करने में भी सफल रहेंगी। इसके साथ ही अपने समस्त कार्यों को आप शान्त चित्त से सम्पन्न करेंगी। आपको अल्प मात्रा में भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर एवं प्रियकर लगेगा तथा उसके लिए आप नित्य रूचिशील रहकर आनन्द की अनुभूति करेंगी।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ळल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

आपके पास धन सम्पति की विपुलता रहेगी एवं समाज में एक धनाढ्य महिला के रूप में प्रसिद्ध होगी परन्तु आप कंजूसी की वृति से युक्त रहेंगी। अतः धन को उन्मुक्त रूप से व्यय करने में असमर्थ रहेगी तथा संचय के प्रति आपका विशेष ध्यान रहेगा। पुरूषवर्ग में आप आदरणीय तथा प्रिय समझी जाएंगी एवं उससे आपको यथायोग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा। साथ ही अवसरानुकूल आप उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। इसके अतिरिक्त

आप विदेश में अधिकांश रूप से भ्रमण करती रहेंगी।

कृपणो धनपूर्णेः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप हमेशा स्पष्ट बोलने में विश्वास रखेंगी तथा प्रयत्नपूर्वक अपनी इस प्रवृति का जीवन में अनुपालन करती रहेंगी। साथ ही कई प्रकार के व्यसनों आदि का भी आपको शौक रहेगा तथा इनका आप आस्वादन करती रहेंगी। साथ ही आप दुराग्रही प्रवृति की महिला भी होंगी तथा अपने कार्यों या बात पर ही अडिग रहेंगी चाहे वह सही हो या न हो

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

आप जन्म के समय लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से युक्त रहता हैं। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त ही शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आयु पूर्ण आयु रहेगी तथा जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप यत्न पूर्वक सफल रहेंगी। साथ ही आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। लेकिन स्वास्थ्य से आप मध्यम रहेंगी एवं समय समय पर श्वास कफादि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। कुल मिलाकर आपका सामान्य जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नाक उन्नत होगी तथा मुख एवं मस्तक विस्तृत आकार का रहेगा। साथ ही हाथ, पैर एवं कमर में स्थूलता भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होगी। आपके शरीर में लावण्यता की अल्पता रहेगी परन्तु इसमसे आपका सौन्दर्य विशेष प्रभावित नही होगा एवं उसमें सौन्दर्य तथा आकर्षण बना रहेगा। आपके अर्न्तमन में विद्रोह की भावना भी रहेगी। इसके साथ ही आपके स्वभाव में उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। धर्म में भी आपकी सामान्य श्रद्धा रहेगी। आप की प्रवृति आलसी भी होगी शिल्प या चित्रकारी में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी तथा इस क्षेत्र में विशेष योग्यता एवं ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप कभी कभी मानसिक चिन्ताओं के कारण व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगी।

उद्घोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विभिन्न शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा अतः समाज में एक विदुषी के रूप में आपका प्रभाव रहेगा तथा कार्यों को सम्पन्न करने की योग्यता भी आप में रहेगी। इसके साथ ही शत्रुवर्ग का नाश करने में भी आप नित्य सफल रहेंगी।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप की प्रवृति अप्रत्यक्ष रूप से कूर कार्यों को करने में भी प्रवृत रहेगी या आप इन कार्यों में अपना अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान करेंगी। यात्रा तथा भ्रमणादि करने में आपकी विशेष रूचि रहेगी। अतः अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत करेंगी। आप दूसरे के धन को प्राप्त करने की नित्य इच्छा करेगी तथा इसके साथ ही धन के प्रति आप में लालच का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः क्षय वृद्धि से युक्त रहेगी अर्थात् इसके अतिरिक्त सुगध्ति द्रव्यों का अनुलेपन करने तथा पुष्पादि के प्रति भी हार्दिक रूचि रहेगी एवं इसका आप उपयोग समय समय पर करती रहेंगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप में श्रेष्ठ विद्वानों के गुण विद्यमान रहेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा भी रहेगी परन्तु अन्य विद्वान जनों को आप यथोचित सम्मान प्रदान नहीं करेंक्षी इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

जीवन के हर क्षेत्र में आप अधिकांश रूप से विजयी तथा सफल रहेंगी एवं जीवन में सदाचार का यत्नपूर्वक पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। धनवैभव से आप प्रायः सुशोभित रहेंगी लेकिन यदा कदा इसका अभाव भी आपके पास रहेगा। गुरूजनों तथा श्रेष्ठ लोगों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा का भाव विद्यमान रहेगा। अतः अवसरानुकूल आप इनकी सेवा तथा सहायता के लिए तत्पर रहेंगी एवं पुरूष वर्ग में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप विशाल परिवार की स्वामिनी होंगी तथा आपकी जाति या वर्ग के लिए जो भी अच्छा कार्य होगा उसको अपने पूर्ण प्रयत्नों से सफल करेंगी। अतः जाति तथा बन्धुवर्ग में आपको उचित मान सम्मान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप कई सद्गुणों से सुशोभित रहेंगी था

जीवन में इसका अनुपालन करके प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन दीर्घ तथा शरीर की नसे भी शरीर से बाहर दृष्टिगोचर होगी। समाज तथा कार्यक्षेत्र में आप पुरूषों से भी आपके मैत्रीपूर्ण संबंध रहेंगे। साथ ही मित्रवर्ग के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह तथा सम्मान का भाव भी रहेगा तथा उनका सहयोग करने के लिए आप सदैव उद्यत रहेगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप एक दानी प्रवृति की महिला होंगी तथा जीवन में यत्नपूर्वक इस प्रवृति का अनुपालन करने में तत्पर रहेंगी। इस प्रवृति से आपको सामाजिक प्रतिष्ठा तथा ख्याति भी अर्जित होगी तथा दूर दूर तक लोग आपको जानेंगे। साथ ही कृतज्ञता का भाव भी आप में रहेगा एवं अन्य जनों को उपकृत होने पर भी उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा उनका हार्दिक धन्यवाद भी करेंगी। आपकी आखें सुन्दरता से युक्त दर्शनीय रहेगी तथा बुद्धि भी सरलता से युक्त रहेगी तथा किसी के साथ धोखा या प्रपंच नहीं करेंगी। इस प्रकार अपने मृदु व्यवहार तथा अन्य सद्गुणों के कारण आप समाज में प्रसिद्धि तथा लोकप्रियता को अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा स्वभुजबल से धनार्जन करके सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के वाहन आदि साधनों से भी आप सुशोभित रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आप कभी कभी अधिक रूप से बोलने वाली होंगी एवं हृदय में दया एवं करूणा के भाव की रहेगी परन्तु आप एक साहसी महिला होंगी। अतः साहस पूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगी। साथ ही क्रोध की भी अधिकता आप में होगी एवं अकारण ही इसका प्रदर्शन भी करती रहेंगी। आप की

आपमें विवादादि करने की भी इच्छा रहेगी तथा अन्य जनों से आपका परस्पर कलह आदि होता रहेगा। लेकिन शारीरिक बल से आप पूर्ण रहेंगी।

जीवन में यदा कदा उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकती हैं। साथ ही आपके सौन्दर्य भी सामान्य आकर्षक रहेगा। आप अपने सम्भाषण में कभी कभी कटु शब्दों का भी प्रयोग करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न अप्रहन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में जन्म होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रवृति की महिला होगी एवं अपने कार्यकलापों में बाह्य हस्तक्षेप पसन्द नहीं करेंगी। आप में सद्गुणों की भी अधिकता रहेगी एवं शौर्यगुणों से भी आप युक्त रहेंगी एवं अपने कार्य कलापों को साहस तथा निर्भयता से सम्पन्न करेंगी। आप एक तेजस्वी महिला होंगी तथा आपके तेज से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे। इसके साथ ही वीणा आदि वाद्य यंत्रो को बजाने में भी आप रूचिशील रहेंगी तथा इसमें दक्षता प्राप्त करेंगी। आप एक ईमानदार तथा विश्वास योग्य महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण विश्वसनीय तथा सम्मानित समझी जाएंगी।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी

संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझें जाएंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्दा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्दा नक्षत्र, गंडयोग तथा वणिज करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंच धातु, लोहा,

तिल, तेल, कम्बल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं समस्त अशुभ प्रभाव नष्ट होकर सर्वत्र शुभ प्रभावों की वृद्धि होगी एवं लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।